International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 9 Issue 6 Ser. V || June. 2020 || PP. 75-77

पर्यावरण की राजनीति एवं पर्यावरण का विकास

डॉ सुरेंद्र सिह
एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय कोटपूतली

सन्दर्भ

आज तक यह तथ्य विश्व के सभी देश स्वीकार कर चुके हैं, कि 'पर्यावरण एक साझी विरासत' है और इसकी रक्षा का दायित्व किसी एक देश का नहीं अथव कुछ देशों का नही अपितु सम्पूर्ण विश्व समुदाय का है। विश्व का ध्यान सर्वप्रथम जून 1972 में स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में पर्यावरण सम्मेलन से आकृष्ट हुआ, जिसमें भारत सहित 58 देशों ने भाग लिया तथा विश्व के 119 देशों ने एक ही पृथ्वी का सिद्धान्त स्वीकार किया।

इसी सम्मेलन में सयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) का शुभारम्भ हुआ। अधिवेशन के बाद जो घोषणा पत्र जारी किया गया। उसके अनुसार –

1. मानव को स्वतन्त्र, समानता एवं जीवन के लिए अनुकूल परिस्थितियों की उपलब्धता के साथ जीवित रहने का मौलिक अधिकार प्राप्त है। जीवित रहने के लिए उसे एक वातावरण की आवश्यकता है जिसमें वह बीमारियों से मुक्त रह सके।

2. पर्यावरण प्रदूषण मानव के लिए खतरा बनता जा रहा है, इस स्थिति में प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है, कि वह वर्तमान एवं भविष्य में पैदा हाने वाली पीढ़ियों के लिए पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचायें, साथ ही सुधारने का भी प्रयाय करें।

किन्तु इस घोषणा के बावजूद विश्व के देशों ने विशेष रूप से औद्योगिक देशों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। इसी उपेक्षा के चलते संयुक्त राष्ट्रसंघ का दूसरा सम्मेलन 'रियो में पर्यावरण और विकास' विषय पर जून 1992 में आयोजित हुआ जिसे 'पृथ्वी सम्मेलन' का नाम दिया गया। विश्व के 170 देशों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। विगत 20 वर्षो के पर्यावरण सुधार के प्रयत्नों की समीक्षा की गई तथा ऐजेण्डा–21 के अर्न्तगत 21 वीं सदी में पर्यावरण संरक्षण को कोई नहीं दिशा देने के लिए निर्देश तैयार कर कार्ययोजना पारित की गई थी। योजना के अनुसार –

''गरीबी और शोषण पर आधारित उपभोक्ता संस्कृति, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा ग्रामीण कृषि विकास हेतु सहयोग के अतिरिक्त, पर्यावरण सुरक्षा, रेडियोधर्मी कचरे से बचाव तथा वनों की रक्षा से सम्बन्धित अनेक कार्य योजनायें तैयार की गई थीं। भारत भी हस्ताक्षर करने वाले देशों में एक था।''

संयुक्त राष्ट्रीसंघ की विकास रिपोर्ट (2000–2001) में गरीवों की आवाज शीर्षक के तहत जनसंख्या का सर्वेक्षण किया है, वह चौंकाने वाला है, इन रिपोर्टों के अनुसार दुनियाँ के 80 करोड़ लोगो को आज भी नहीं मिलता। यह जनसंख्या भारत से थोड़ी कम है। पृथ्वी नामक ग्रह पर लगभग 610 करोड़ मनुष्य रहते हैं। इनमें 20.8 प्रतिशत अति निर्धन आबादी सिर्फ 0.2 प्रतिशत संसाधनों पर आश्रित है। यह पश्चिमी आबादी पृथ्वी के ससाधनों को तेजी से नष्ट कर हरी है। विकासशील देशों के 50 बच्चे अपने जीवन काल में पर्यावरण को जितना प्रदूषित करते है, उतना प्रदूषण औद्योगिक देशों में जन्मा एक बच्चा करता है। सन् 1960 की तुलना में पानी की दुगना प्रयोग हो रहा है, और लकड़ी का प्रयोग 25 वर्षों में 40 प्रतिशत बढ़ा है। हमारी आधुनिक जीवनशैली विश्व के संसाधनों की एक ऐसी दोहन संस्कृति बन गई है कि वह पृथ्वी को अनउपजाऊ बना देगी।

क्योटो सन्धि (1997) पर पर्यावरण विदों का दबाव रहा था। इस सन्धि पर जी–8 देशों का भी सकारात्मक दृष्टिकोण था। लेकिन वह अपने काल के प्रारम्भ से ही तीन गुटों में बंटी रही। अमेरिका और यूरोपीय देश सदैव ही विकासशील देशों को वली का बकरा बनाते रहे हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि विश्व समृद्ध जी–8 देश 80 प्रतिशत कार्बन डाई आक्ससाइड गैस उत्सर्जन करते है। भारत मात्र 3.5 प्रतिशत कार्बन डाईआक्साइड का उत्सर्जन करते हैं। विकसित और विकासशील देशों के उद्देश्यों में भी अन्तर है। भारत जैसे विकासशील देश अपनी विशाल जनसंख्या के भरण पोषण के लिए संसाधनों का प्रयोग करना चाहता है। जब कि विकसित देश अपने विशाल आर्थिक साम्राज्य की रक्षा के लिए कार्बन डाईआक्साइड का उत्सर्जन कर रहे है।

'मराकस सम्मेलन' में यूरोप के समृद्ध देशी का 'यूरोपियन यूनानियनद्ध दूसरी और कनाडा, आस्ट्रेलिया, रूप, जापान थे, तीसरा गुट विकासशील देशों का था। अमेरिका ने इस सन्धि को आर्थिक हितों के खिलाफ बताकर उससे अपने को अलग कर लिया। विश्व बैंक द्वारा थोपी गई विकास की नीतियों के कारण होने वाले पर्यावरण प्रदूषण और पारिस्थितिकीय विनाश के विरूद्ध तीसरी दुनियाँ के देशों में आवाजें उठनें लगी है। पर्यावरण असतुलन के मुद्दे पर सम्पूर्ण विश्व उत्तरी व दक्षिणी दो खेमें में बटे नजर आये। इस बटवारे का आधार है उत्तर की सम्पन्नता और दक्षिण की विपन्नता। उदाहरणतया– यदि उत्तरी का महाशक्तिशाली देश अमेरिका दक्षिण खेमें के भारत के मुकाबले कहीं बड़े अनुमान में पर्यावरण प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है। भारत में दुनियाँ की 16 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है तथा उसकी ऊर्जा खपत का मात्र 3 प्रतिशत ही है। यही नहीं वायु मण्डल में उत्सर्जित कार्बन डाईआक्साइड़ के मात्र 3 प्रतिशत के लिए ही भारत जिम्मेदार है। जबकि अमेरिका में विश्व की 5 प्रतिशत जनता ऊर्जा का उपभोग कर रही है किन्तु यह देश विश्व की एक चौथाई ऊर्जा का उपभोग करके वातावरण में 22 प्रतिशत कार्बन डाईआक्साइड़ की उपस्थिति के लिए जिम्मेदार है। यह उत्तर दक्षिण के एक देश का उदाहरण है।

ऐसे ही दूसरे समझौते के अन्तर्गत (जैव विविधता) कहा गया कि विकसित देश (जी0एफ0एफ0) में उपलब्ध फण्ड की सहायता दिलाकर विकासशील देशों में जैव की विविधता की रक्षा के लिये प्रेरित करें। अमेरिका ने इस समझौते पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया उसका मानना है कि ऐसा करने से उसका जैव उद्योग प्रभावित होगा। जो तीसरी दुनियाँ से उपलब्ध होने वाले जन्तुओं एवं वनस्पतियों पर ही आधारित है। और अभी पिछले वर्षों से विश्व में एक नई अर्थव्यवस्था (W.T.O.) के माध्यम से लागू की गई है। जिसे भूमण्डलीकरण या उदारीकरण कहा जाता है। इस व्यवस्था के अनुसार विकसित राष्ट्र अविकसित राष्ट्र व विकासशील राष्ट्रों में अपनी औद्योगिक इकाईयों को स्थापित करके अपने देश के पर्यावरण को सुरक्षित कर रहे है और तीसरी दुनियाँ के देशों में पर्यावरण को सुरक्षित कर रहे हैं और तीसरी दुनियाँ के देशों में पर्यावरण प्रदूषण की मात्रा बढ़ा रहे है तथा विश्व को संदेश देने का कार्य भी कर रहे है कि जितना भी पर्यावरण प्रदूषण हो रहा है, वह अल्प विकसित व अविकसित राष्ट्रों के द्वारा हो रहा है। इसके लिए उन्होनें पर्यावरणीय मानदण्डों के अधार प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास किया है। तीसरी दुनियाँ के देशों की गरीबी के बारे में चिन्ता करने वाले समूह चाहते है कि इन देशों का अपने उत्पादों को निर्यात के ज्यादा अवसर मिलने चाहिए।

पर्यावरण से जुड़े कई संगठन जंगलों की रक्षा करने वाले और प्रदूषण को रोकने के ऐजेण्डें पर काम कर रहे हैं, इनका मानना है कि आर्थिक विकास के मुकावले पर्यावरण की सुरक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण है जब कि कुछ समूह विकासशील देशों में आर्थिक व औद्योगिक विकास की दर बढ़ाने पर जोर देते है।

आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति और पर्यावरण सुरक्षा के आह्वान के साथ पृथ्वी सम्मेलन के दस वर्ष पूरे होने पर 26 अगस्त 2002 को जोहान्सवर्ग (दक्षिणी अफ्रीका) में सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन में चार हजार सरकारी व तीन हजार गैर सरकारी प्रतिनिधियों तथा 189 देशों ने भाग लिया और भारत का प्रतिनिधत्व पर्यावरण एवं वन मन्त्री श्री टी0आर0 बालू ने किया। सतत् विकास पर विश्व सम्मेलन (जोहान्स वर्ग) में भारत सहित अनेक विकासशील देशों ने विकसित देशों से हर्जाने की माँग की तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए एजेण्डा–21 में तय किये गये बिन्दुओं पर पुर्न विचार के लिए कहा। इस सम्मेलन में अमीर देशों व गरीब देशों के बीच गहरे मतभेद रहे। अमीर देश अभी को नया सहायता पैकेज देने में आना कानी कर रहे हैं। इस पैकेज का उल्लेख 77 पृष्ठ के उस दस्तावेज में किया गया है जो वाली (इण्डोनेशिया) में इस सम्बन्ध में हुई बात चीत में तैयार किया गया था। अमीर देशों को इसके तरह जो समझौते करने पड़ेगें उनसे स्वास्थ्य सुविधाओं को बढ़ावा देने जीवाश्म ईधन को जलाने से होने वाले प्रदूषण को नियन्त्रित करना और समुद्र में मछलियों की संख्या कम न होने देना आदि सामिल है। पर्यावरण विवादों ने अमेरिका और यूरोपीय संघ पर आरोप लगाया कि वे पर्यावरण संरक्षण और गरीबी उन्मूलन की कीमत पर उदारीकरण तथा वैश्वीकरण को बढ़ावा दे रहे है।

पर्यावरण संगठन 'फ्रेडस ऑफ द अर्थ इण्टरनेशनल' 'ग्रीनपीस और थर्ड बर्ल्ड नेटवर्क' ने इस अवसर पर कहा कि यूरोपीय संघ और अमेरिका के स्वयं से विकासशील देशों को निराशा होगी। एक अफ्रीकी प्रतिनिधि ने कहा कि अब सब कुछ विकसित देशों पर निर्भर करता है उसने अमेरिका पर आरोप लगाया कि वह स्वच्छता को बढ़ावा देने वाली परियोजनाओं और सतत् ऊर्जा को बढ़ावा देने वाली परियोजनाओं के लिए धन उपलब्ध कराने का विरोध कर हा है।

जोहान्सवर्ग घोषणा में 189 देशों ने विश्व को दो अरब से अधिक गरीबों को चुंगल से निकालने और जीवन का मूल आधार पर्यावरण की क्षति को पूर्ण करने का संकल्प लिया। सम्मेलन में महसूस किया गया कि गरीब और अमीरों तथा विकसित और विकासषील देषों के बीच बढ़ती खाई ने वैश्विक खुषहाली, सुरक्षा, और स्थिरता के लिए एक गंभीर खतरा उत्पन्न कर दिया है। सम्मेलन में भाग लेने वाले नेताओं ने आगाह किया कि विष्व पर्यावरण पर लगातार चोट हो रही है, जैवविविधता को नुकसान हो रहा है। मौसम परिवर्तन तथा प्राकृतिक बीमारियाँ अधिक आम और खतरनाक रूप ले रही है। 'फ्रेंडस ऑफ इण्टर नेषनल' के डेनियल मिटलर के अनुसार निजीकरण और उदारीकरण की नीतियों को लेकर दुनियाँ भर में उठ रही चिन्ताओं का जवाब देने के बजाय सरकारें यहाँ भी विष्व व्यापार संगठन के एजेण्डा को आगे बढ़ा रहीं है। बस इस पर सतत् विकास का लेबल लगाया जा रहा है।''

पर्यावरण बड़ी नाजुक चीज है, यह एक अजीबों गरीब संतुलन पर टिका है। इसमें लचीलेपन की एक सीमा है कि मानव के जैविक सांस्कृतिक विकास को मानव ने गढ़ा है, किन्तु पिछले कुछ सदियों से खासकर औद्योगिक क्रांन्ति के बाद स्थिति पलट गई है। मानव का पर्यावरण में हस्तक्षेप बढ़ा है। मानव संस्कृति पर्यावरण को प्रभावित कर रही है, उसको परिवर्तित कर रही है। इस युग की अधिकांष समस्यायें इसी हस्तक्षेप का परिणाम है। वास्तव में पर्यावरण और विकास ऐसे अहम् मुद्दे है, जिन्हें एक दूसरे से काटकर नहीं देखा जा सकता। क्या पर्यावरण को बिना कोई क्षति पहुँचायें विकास सम्भव है। ये ऐसे प्रष्न है जिनका उत्तर आसान नहीं है। इन दोनों की व्यापक समझ और अर्न्तसम्बन्धों की जानकारी के बगैर सम्मान जनक हल तक पहुँचना सम्भव नहीं है।

मानव के विकास के साथ पर्यावरण का अन्योनाश्रित सम्बन्ध है तो मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति के विकास में पर्यावरण का महत्वपूर्ण योगदान है। पर्यावरण की अच्छी समझ के अभाव में मनुष्य के बारे में अच्छी समझ विकसित कर पाना कठिन है। अतः मानव समाज और संस्कृति के ज्ञान के लिये हमारे वातावरण का ज्ञान आवश्यक है।

पर्यावरण का सम्बन्ध विकास से भी है। प्रायः होता आया है कि विकास का जो मार्ग हम चनते है, उसका षिकार वातावरण बनता है। पदार्थो एवं रसायनों ने जल भूमि प्रदूषण करना प्रारम्भ कर दिया। उद्योगों के साथ ही परिवहन में भी क्रान्ति आई जिससे मोटर बाहनों द्वारा प्रदूषण में और अधिक बृद्धि होने लगी। जनसंख्या वृद्धि नगरीकरण एवं औद्योगीकरण का सामूहिक प्रभाव पर्यावरण के विभिन्न घटकों पर होने लगा। यह प्रभाव स्वयं को भी प्रभावित करने लगा।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. (दीक्षित, 94)21
2. (दीक्षित, 01)22
3. (दीक्षित, 02)23
4. (किरण, 02)24
5. (मिटलर, 02)25
6. (शर्मा, 01)27
7. 'पर्यावरण संरक्षण में वैकल्पिक ऊर्जा महत्वपूर्ण' दैनिक समाचार पत्र 07/09/2001
8. 'प्रदूषण के खिलाफ मतदान वहिष्कार' दैनिक समाचार पत्र 12/02/2002
9. 'पर्यावरण चेतावनी ही चेतावनी' राष्ट्रीय सहारा 06/06/1998
10. गर्ग मृदुला 'पर्यावरण और हम' सचिन प्रकाशन नई दिल्ली 1990
11. विष्णुदत्त शर्मा 'प्रतिरोधी वृक्ष' किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली 1990
12. पर्यावरण प्रश्नोत्तरी–साहित्य प्रकाषन नई दिल्ली